MSB
Class X
Hindi

Time : 3 hrs **Total Marks : 80**

सूचनाएँ:

1) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य तथा पूरक पठन की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।
3) रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
4) शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1: गद्य **[20]**

प्रश्न 1.

(अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।[8]

1) आकृति पूर्ण कीजिए। [2]

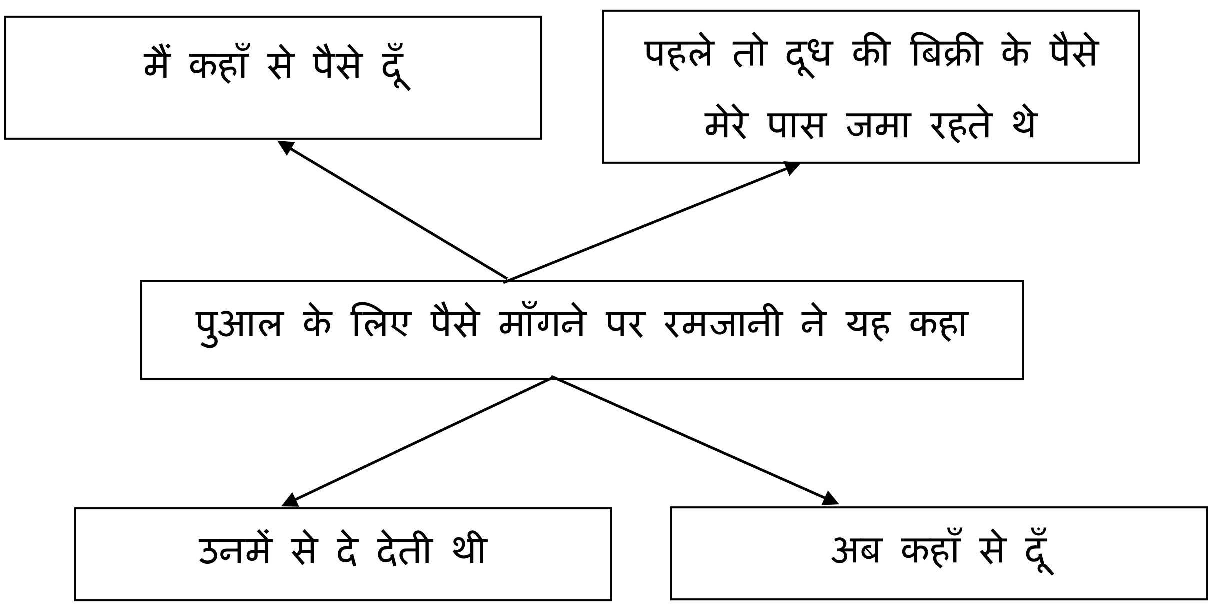

उसके साथी नईम ने उसे कुछ परेशान देखा तो पूछा - "करामत मियाँ, क्या बात है, बड़े परेशान नज़र आते हो? खैरियत तो है?"

"ऐसी कोई विशेष बात नहीं है।

"कुछ तो होगा।"

"क्या बताऊँ। गाय ने दूध देना बंद कर दिया है, बूढी हो गई है। बैठाकर खिलाना पड़ेगा और इस जमाने में गाय-भैंस पालने का खर्चा...।"

"इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है? गाय बेच दो।"

करामत अली ने हौका भरते हुए कहा, "हाँ, परेशानी से छुटकारा पाया जा सकता है। बहुत आसान तरीका है। लक्ष्मी को बेच दिया जाए।"

वह नईम के पास से हटकर अपने काम में जुट गया।

करामत अली रात का गया सवेरे कारखाने से घर लौटा। रात की ड्यूटी से घर लौटने पर ही वह लक्ष्मी को दुहता था। घर में घुसते ही उसने रमजानी से पूछा- "क्या लक्ष्मी को अभी तक चारा नहीं दिया?"

रमजानी बोली- "रहमान से कहा तो था।"

"तुम दोनों की मर्जी होती तो गाय को अब तक चारा मिल चुका होता। अगर वह दूध नहीं दे रही है तो क्या उसे भूखा रखोगे?" कहते हुए करामत कटा हुआ पुआल, खली और दर्रा आदि ले जाकर लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।

लक्ष्मी उतावली-सी तैयार हो रही सानी में मुँह मारने लगी।

गाय को सानी देकर करामत अली उसकी पीठ देखने लगा। रोगन ने अच्छा काम किया था। दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।

दस-पंद्रह दिनों से यों ही चल रहा था। एक दिन जब करामत अली ने पुआल लाने के लिए रमजानी से पैसे माँगे तो वह बोली, "मैं कहाँ से पैसे दूँ? पहले तो दूध की बिक्री के पैसे मेरे पास जमा रहते थे। उनमें से दे देती थी। अब कहाँ से दूँ?"

"लो, यह राशन के लिए कुछ रुपये रखे थे।" कहते हुए रमजानी ने संदूकची में से बीस का एक नोट निकालकर उसे थमाते हुए कहा, "इससे लक्ष्मी का राशन ले आओ।"

2) कारण लिखिए: [2]

(i) करामत अली लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।

उत्तर : सुबह से रमजानी या रहमान किसी ने भी लक्ष्मी को चारा, दर्रा कुछ भी नहीं दिया था। लक्ष्मी बहुत भूखी थी।

(ii) करामत अली लक्ष्मी को बेचना नहीं चाहता था।

उत्तर : करामत अली जानता था कि बूढ़ी लक्ष्मी को अगर कोई खरीदेगा तो वह उसे काट-काटकर बेचने के लिए ही खरीदेगा।

3) i) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए: [1]

- विशेष × सामान्य
- बूढ़ी × युवा

ii) निम्नलिखित शब्दों को वर्तनी के नियमानुसार लिखिए: [1]

- परसान - परेशान
- खेरियत - खैरियत

4) मानव और पशु के संबंध के विषय में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : मानव और पशुओं का साथ आदिमकाल से ही चला आ रहा है। पहले पहल अपनी भूख को शांत करने के लिए वह जानवरों का शिकार किया करता था परंतु कालांतर में समझ विकसित होने पर

उसने पशुओं का उपयोग कृषि और आवागमन के लिए करना शुरू कर दिया। मानव ने अपनी सूझ-बूझ से जंगली जानवरों को भी पालतू बना दिया। पशु मनुष्य के सच्चे मित्र हैं। मित्रता की कसौटी पर पशु हमेशा की खरे उतरे हैं। कुछ पशु तो अपने मालिक को बचाने के लिए अपनी जान भी दाँव पर लगा देते हैं। इस प्रकार मानव और पशु का संबंध चलता ही रहेगा।

(आ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) आकृति पूर्ण कीजिए: [2]

परिच्छेद में बताई गई शरीर श्रमवाली दो वस्तुएँ

- आजीविका की साधन-सामग्री
- पैसे के बल पर सामग्री खरीदने वाले पैसे की जड़

आजीविका की साधन-सामग्री किसी-न-किसी के श्रम बिना हो ही नहीं सकती। इसलिए बिना शरीर श्रम किए उस सामग्री का उपयोग करने का न्यायोचित अधिकार हमें नहीं मिलता। अगर पैसे के बल पर हम सामग्री खरीदते हैं तो उस पैसे की जड़ भी अंत में श्रम ही है।

धनिक लोग अपनी ज्यादा संपत्ति का उपयोग समाज के हित में ट्रस्टी के तौर पर करें। संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ का भी आखिर आशय क्या है? अपने पास आवश्यकता से जो कुछ अधिक है, उसपर हम अपना अधिकार न समझकर उसका उपयोग दूसरों के लिए करें।

यह भी बहस चलती है कि धनिकों के दान से सामाजिक उपयोग के अनेक बड़े-बड़े कार्य होते हैं जैसे कि अस्पताल, विद्यालय आदि। अगर व्यक्तियों के पास संपत्ति इकट्ठी न हो तो समाज को ये लाभ कैसे मिलेंगे?

वास्तव में जब संपत्ति थोड़े-से हाथों में बँधी न रहकर समाज में फैली रहेगी तो सहकार पद्धति से बड़े पैमाने पर ऐसे काम आसानी से चलने लगेंगे और उनका लाभ लेने वाले, याचक या दीन की तरह नहीं, सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे।

2) उत्तर लिखिए: [2]

1. संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ का आशय क्या है?

उत्तर : अपने पास आवश्यकता से जो कुछ अधिक है, उसपर हम अपना अधिकार न समझकर उसका उपयोग दूसरों के लिए करें यही संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ का आशय है।

2. समाज में संपत्ति फैली रहने से कौन-से लाभ होंगें?

उत्तर : जब संपत्ति थोड़े-से हाथों में बँधी न रहकर समाज में फैली रहेगी तो सहकार पद्धति से बड़े पैमाने पर ऐसे काम आसानी से चलने लगेंगे और उनका लाभ लेने वाले, याचक या दीन की तरह नहीं, सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे इस प्रकार समाज में संपत्ति फैली रहने से ये लाभ होंगें।

3) i) ‘इक’ प्रत्यययुक्त दो शब्द लिखिए [1]

सामजिक, प्राथमिक

ii) निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखें। [1]

- हाड × माँस
- प्रत्यक्ष × अप्रत्यक्ष

4) 'समाज परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है', कथन से संबंधित अपने विचार लिखिए। [2]

परोपकार एक सर्वश्रेष्ठ भावना है। परोपकार से तात्पर्य दूसरों की सहायता करने से है। हमें प्रकृति से परोपकार का संदेश लेना चाहिए। सूर्य, चंद्रमा, तारे, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, पेड़ आदि दिन-रात मनुष्य के कल्याण में लगे हुए हैं। ये सभी दूसरों के उपकार के लिए कुछ न कुछ देते हैं। सेवा या परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग खुलता है। व्यक्ति जितना परोपकारी बनता है, उतना ही ईश्वर की समीपता प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्न रहता है। वह दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है।" दुनिया में शांति, अहिंसा, सहनशीलता, भाई चारे का संदेश फैलाना चाहिए। पेड़-पौधों, हरियाली, पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए है। सभी पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं के प्रति करूणा की भावना रखनी चाहिए। परोपकार की भावना से ही हम एक उत्तम राष्ट्र और विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) आकृति पूर्ण कीजिए: [2]

महिलाएँ इन क्षेत्रों में अपनी योग्यता का लोहा मनवा रही है

बैंकिंग, आईटी, मेडिकल

इंजीनियरिंग, बिजनेस, और उद्यमिता

आज भारतीय महिलाएँ घर की चाहरदीवारी से बाहर निकलकर, रुढ़िवादी सोच को पार कर विभिन्न व्यवसायों और सेवाओं में कार्यरत है। महिलाएँ संघ लोक सेवा आयोग, राज्य सेवा योग या अन्य कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो कहीं भी पीछे नहीं है। बैंकिंग, आईटी, मेडिकल, इंजीनियरिंग, बिजनेस, और उद्यमिता प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवा रही है। हर वर्ष दसवीं और बारहवीं की परीक्षाओं में लड़कियाँ बाजी मार रहीं हैं। खेलों, सौंदर्य प्रतियोगिताओं, पत्रकारिता, लेखन, डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर, जज, प्रशासानिक आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। यहाँ तक की राजनीति में भी वार्ड, सरपंच, प्रधान, विधानसभा, लोकसभा मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे पदों पर भी अपना दमखम दिखाने में पीछे नहीं है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महिलाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही है।

2) 'महिला सशक्तिकरण से परिवार, समाज और देश सभी का कल्याण होगा' इस विषय पर अपने विचार लिखिए। [2]

नारी के बिना किसी समाज की रचना संभव नहीं है। महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तरों पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण में वह ताकत है कि वो समाज और देश में बहुत कुछ परिवर्तन कर सकती है। वह समाज में समस्याओं को पुरुषों से बेहतर ढ़ंग से निपट सकने में सक्षम है। वह देश और परिवार के लिये अधिक जनसंख्या के नुकसान को अच्छी तरह से समझ सकती है। अच्छे पारिवारिक योजना से वो देश और परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन कर सकती है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ हिंसा को सँभालने में सक्षम है चाहे वो पारिवारिक हो या सामाजिक। महिला सशक्तिकरण के द्वारा ये संभव है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था के महिला-पुरुष समानता वाले वाले देश को पुरुषवादी प्रभाव वाले देश से बदला जा सकता है। महिला सशक्तिकरण की मदद से बिना अधिक प्रयास किये परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो सकता है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अत: वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है।

विभाग 2 : पद्य **[12]**

प्रश्न 2.

(अ) (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) आकृति पूर्ण कीजिए:

1. ये मीरा के प्रतिपालक हैं- कृष्ण
2. कृष्ण के बिना इनको कहीं आश्रय नहीं है- मीरा
3. मीरा को प्रभु से मिलने की तीव्र यह है- लालसा
4. मीरा की यह संसार सागर में डूबने वाली है- नौका

हरि बिन कूण गती मेरी।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी।।

आदि-अंत निज नाँव तेरो हिमायें फेरी।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी।।
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी।।

2) पद्यांश में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए:

(i) दासी - चेरी

(ii) आश्रय - गती

(iii) बार-बार - बेर-बेर

(iv) नौका - बेरी

3) उपर्युक्त पद्यांश की हरि बिन कूण--------आरति है तेरी।। इन पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद में मीरा अपने प्रभु से कहती है कि हे प्रभु! तुम्हारे बिना मेरा उद्धार नहीं हो सकता क्योंकि तुम्ही ही मेरे पालनहार और रक्षक हो। मैं तो तुम्हारी दासी हूँ। मेरा जन्म-मरण तुम्हारे नाम के चारों ओर आरती की तरह घूमता रहता है। विकारों से भरे इस भवसागर में उसके नाव के पाल फट गए हैं। अतः इसे डूबने में समय नहीं लगेगा। हे प्रभु! मेरे नाव के पाल बाँध दो। यह तुम्हारी विरह विरहणि तुम्हारी राह देख रही है। तुम मुझे अपनी शरण में ले लो यह दासी मीरा तुम्हारे नाम की रट लगाए हुए हैं, तुम्हारी शरण में है। इसे बचाकर इसकी लाज रख लो।

(आ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) आकृति पूर्ण कीजिए: [2]

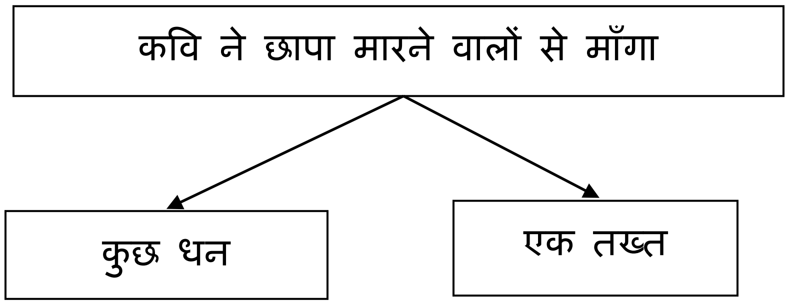

सिर मत धुनिए मेरी एक बात सुनिए
मेरे घर में अधिक धन होता तो आप ले जाते
अब जब मेरे घर में बिल्कुल धन नहीं है
तो आप मुझे कुछ-देकर क्यों नहीं जाते
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं
उन्हें आप निकलवा लेते हैं
बहुत अच्छी बात है, निकलवा लीजिए
पर जिनके घर में बैठने को कुछ भी नहीं
उनके यहाँ कम-से-कम
एक तख्य तो डलवा दीजिए।

2) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके अर्थ निम्नलिखित शब्द हों: [2]

i) पलंग

उत्तर : परिच्छेद में सोफे के अलावा सोने-चाँदी से बनी और किस वस्तु का उल्लेख हुआ है?

ii) धन

उत्तर : लेखक के घर में क्या बिलकुल नहीं है?

3) उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों- 'बहुत अच्छी....... तख्त डलवा दीजिए' का भावार्थ लिखिए। [2]

उत्तर : कवि कहते हैं कि जिनके घर सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं बेशक आप उनके घरों से निकलवा लीजिए परंतु जिनके घर टूटी कुर्सी भी नहीं है कम-से-कम उनके घर एक तख्त की व्यवस्था तो करते जाइए।

विभाग : पूरक पठन **[8]**

प्रश्न 3.

(अ) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

एक समय ऐसा भी था जब

- सिरचन की मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं
- लोग उसकी खुशामद करते थे
- लोग कहते- एक दिन का समय निकालकर चलो
- लोग कहते- अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा, उसको बुलाकर? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई कम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा; पगडंडी पर

तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे। मुक्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था, जब उसकी मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे। "अरे, सिरचन भाई! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में। एक दिन का समय निकालकर चलो। बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से-सिरचन से एक जोड़ा चिक बनाकर भेज दो।"

मुझे याद है.. मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, "भोग क्या-क्या लगेगा?"

माँ हँसकर कहतीं, "जा-जा बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी।" पड़ोसी गाँव के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने- "तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी हैं।"

2) 'खेत-खलिहान की मजदूरी' इस विषय में अपने विचार लिखिए। [2]

उत्तर : आज भी हमारे भारतवर्ष में कई ऐसे किसान है जिनके पास अपनी जमीनें नहीं हैं। ये दूसरों के खेत और खलिहानों में मजदूरी करते हैं। ये दिन-भर अपने मालिक के लिए कठिन श्रम करे हैं परंतु बदले में उन्हें उनकी मेहनत का उचित मुआवजा नहीं दिया जाता। काम के व्यस्त दिनों में ये कोई छुट्टी भी नहीं ले सकते हैं यदि लेते हैं तो उस दिन की उनकी मजदूरी काट ली जाती है। इस प्रकार के मजदूरों को कोई सामाजिक और सरकारी सहायता भी नहीं

मिलती है। इसलिए ये मजदूर गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और ऋण से भी दबे होते हैं। संगठित न होने के कारण इनका बहुत शोषण होता है।

(आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) परिणाम लिखिए।

i) सितारों का छिपना

उत्तर : सुना आकाश

ii) तुम्हारा गीतों को स्वर देना

उत्तर : गीतों का अमर होना

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश।
तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर।
सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही।

2) 'रात में सितारे आकाश की शोभा बढ़ाते है' अपने विचार लिखिए। [2]

उत्तर : आकाश भी हमारी प्रकृति का अंग है। यदि आप आकाश की ओर निहारें तो उसमें बनने वाले रंग-बिरंगे चित्रों को देखकर सब कुछ भूल जाएँ। पृथ्वी की तरह आकाश का भी अपना परिवार है। सूर्य है चमकता-दमकता, तो शांत है चंद्रमा। ग्रह हैं, नक्षत्र हैं, आकाश गंगा है, दिशाएँ हैं। इन सबके बावजूद रात में यदि आकाश की शोभा कोई बढ़ाता है तो वे हैं इसमें टिमटिमाने वाले तारे। रात में आकाश में टिमटिमाने वाले तारे न केवल उसकी शोभा बढ़ाते है बल्कि आकाश का सूनापन भी भर देते हैं। रात के अँधेरे में झिलमिलाते तारों को देखने का अलग ही सुख है ये तारे अँधेरे से लड़ते हुए अपनी रोशनी बिखेरते है अपना अस्तित्व बनाते है साथ ही कितने राहगीरों को राह दिखाते है और रात में आसमान की शोभा बढ़ाते है।

विभाग 4 : व्याकरण **[14]**

प्रश्न 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

1. अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद लिखिए: [1]
   - उसकी मौसी शिक्षिका हैं।

   उत्तर : संज्ञा

2. निम्नलिखित अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1]
   - के बाद - राघव भोजन के बाद जाएगा।
   - और - छुट्टी हुई और बच्चे भागने लगे।

3. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का संधि विच्छेद करें। [1]

- धर्मार्थ - धर्म + अर्थ
- ज्ञानोपदेश - ज्ञान + उपदेश

4. निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य के सहायक क्रिया को पहचानिए और उसका मूल रूप भी लिखें। [1]

- बच्चा पलंग से गिर गया।

  उत्तर : गया - जाना
- मेहमान ने शरबत पीया।

  उत्तर : पीया-पीना

5. निम्नलिखित प्रेरणार्थक क्रियाओं में से किन्हीं एक के प्रथम और द्वितीय रूप लिखें। [1]

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
चमकना	चमकाना	चमकवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना

6. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए। [1]

- नाच नचाना

  उत्तर : नाच नचाना - खूब परेशान करना

  शरारती आनंद माँ को प्रतिदिन <u>नाच नचाता रहता है।</u>

7. निम्नलिखित वाक्यों में कारक पहचानकर उसका भेद भी लिखें। [1]

- हे भगवान मुझे बचाओ।

  उत्तर : हे भगवान - संबोधन कारक

- बच्चा पलंग पर सोया है।

  उत्तर : पर - अधिकरण कारक

8. निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्न का प्रयोग करें। [1]

- अपने साहस पराक्रम और शौर्य के लिए राजा विक्रम मशहूर थे।

  उत्तर : अपने साहस, पराक्रम और शौर्य के लिए राजा विक्रम मशहूर थे।

9. निम्नलिखित वाक्यों में किन्हीं दो के काल परिवर्तन कीजिए। [2]

- श्याम घर जाएगा। (सामान्य भूतकाल)

  उत्तर : श्याम घर गया।

- माली ने पौधों को पानी दिया। (सामान्य वर्तमान)

  उत्तर : माली पौधों को पानी देता है।

- सोहन खाना खा चुका था। (अपूर्ण वर्तमान)

  उत्तर : सोहन खाना खा रहा है।

10. रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताएँ। [1]

- वस्तुओं का संग्रह बहुत है, लेकिन यह व्यवस्थित नहीं है।

  उत्तर : संयुक्त वाक्य

11. अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए। [1]

- गाय ने दूध देना बंद कर दिया। (विस्मयार्थक वाक्य)

  उत्तर : अरे! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। [2]

- आज तुमने नया पोशाक पहना है।

  उत्तर : आज तुमने <u>नई</u> पोशाक <u>पहनी</u> है।

- कल मैंने नया पुस्तक ख़रीदा।

  उत्तर : कल मैंने <u>नई</u> पुस्तक <u>खरीदी</u>।

रचना विभाग **[26]**

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्रश्न 5.

(1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए: [5]

आपका भाई अजय खरे/सरला नगर/मध्य प्रदेश अपना अधिकांश समय मोबाइल फोन के उपयोग में बिताता है। मोबाइल फोन के अधिक उपयोग करने से होने वाली हानियों का उल्लेख करते हुए, उसे पत्र लिखिए।

दिनाँक: 24.03.20xx

प्रिय अजय

चिरंजीव रहो!

कल ही पिता जी का पत्र प्राप्त हुआ। उस पत्र को पढ़कर पता चला कि तुम अधिकांश समय मोबाइल फोन के उपयोग में बिताते हो। यह उचित नहीं है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो देश का भविष्य पतन के गर्त में गिरता चला जाएगा।

मोबाइल के अधिक उपयोग से समय बर्बाद होता है और कान संबंधी रोग होते हैं मस्तिष्क पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। मोबाइल से उत्पन्न कंपन के कारण

मनुष्य का एकांत समाप्त हो गया है। इसलिए हमें चाहिए कि हम इसका प्रयोग अपनी आवश्यकताओं के आधार पर करें न कि दिखावे के लिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मोबाइल फोन का उचित उपयोग करोंगे। समय का मूल्य समझोगे और उसके सदुपयोग द्वारा अपने जीवन को सफल बनाओगे। माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बहन

सीमा

कमरा नं. 21,

सेंट फ्रांसिस छात्रावास,

गाजियाबाद।

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

टिकट

प्रति,

अजय खरे

सरला नगर

मध्य प्रदेश

प्रेषक,

सीमा।

कमरा नं. 21,

सेंट फ्रांसिस छात्रावास,

गाजियाबाद।

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

दिनाँक: 24.03.20xx

अथवा

मा.सचिव, महाराष्ट्र, राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल,भांबुर्डा भडा डरा पुणे को चंद्रकांत/चन्द्रिका येवळे, 441, शिवांजली, प्रतापनगर, नांदेड से आवेदन-पत्र लिखकर लिपिक की नौकरी के लिए प्रार्थना करता/करती है।

दिनाँक: 10 जनवरी 20xx

सेवा में,

मा. सचिव,

महाराष्ट्र, राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल,

भांबुर्डा, पुणे।

विषय : लिपिक की नौकरी के लिए आवेदनपत्र।

माननीय महोदय,

गत हफ्ते 'महाराष्ट्र टाईम्स' से मुझे ज्ञात हुआ कि 'महाराष्ट्र, राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल' में लिपिक पद रिक्त है। मैं इस स्थान के लिए आपको आवेदन पत्र भेज रही हूँ। पद से सम्बंधित मेरी योग्यताएँ इस प्रकार हैं -

1. मैंने मार्च 2008 में बालिका विद्यालय पुणे से एस.एस.सी.परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।
2. मार्च 2010 में मैंने एच.एच.सी.मोहन कॉलेज से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।
3. 2011 मैं मैंने एम.एस.सीआयटी.संगणक परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।
4. अनुभव - मुझे राजा विद्यालय में लिपिक के रूप में दो साल का अनुभव है।

अत:आपसे निवेदन है कि आप मुझे एक बार सेवा का और अपनी योग्यता दिखाने का मौका दें।

भवदीय,

चन्द्रिका येवळे,

441, शिवांजली,

प्रतापनगर, नांदेड।

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

पत्र के साथ निम्न प्रतिलिपियाँ संलग्न हैं:

1. एस.एस.सी परीक्षा की अंक तालिका।
2. एच.एच.सी परीक्षा का प्रमाणपत्र।
3. एम.एस.सीआयटी.संगणक परीक्षा का प्रमाणपत्र।
4. लिपिक के रूप में एक वर्ष का कार्यानुभव का प्रमाणपत्र।

टिकट

प्रति,

मा. सचिव

महाराष्ट्र, राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल,

भांबुर्डा,

पुणे।

प्रेषक,

चन्द्रिका येवळे

441, शिवांजली,

प्रतापनगर, नांदेड।

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

दिनाँक: 10 जनवरी 20xx

(2) निम्नलिखित अपठित गदय-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों : [4]

मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, जहाँ की धूल में खेलकर बड़ा होता है, वहाँ से उसे स्वाभाविक लगाव हो जाता है। वह सभी लोग उसके जाने-पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं, और सबका रहन-सहन भी एक-सा होता है। ऐसी दशा में, वहाँ के लोगो से उसकी ममता होना स्वाभाविक है। उसका मन जन्मभूमि के लिए सदैव उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। उसके प्रति प्रेम भावना रखना हमारा कर्तव्य है। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। मनुष्य को कहाँ से स्वाभाविक प्रेम हो जाता है?

(1) मनुष्य का मन कहाँ पहुँचने के लिए उत्सुक रहता है?

(2) स्वर्ग से भी श्रेष्ठ किसे कहा गया है?

(3) जन्मभूमि के प्रति हमें कैसी भावना रखनी चाहिए?

(4) उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

(3) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर उचित शीर्षक दीजिए: [5]

शेखर एक छोटा लड़का------माँ के साथ झोंपड़ी में रहना------बरसात के दिन----- आँधी और तूफान आना----- रेल की पटरी उखड़ जाना-----शेखर की नजर में आना-----रेलगाड़ी आने का समय होना----लाल कमीज पकड़कर पटरी पर खड़ा रहना----रेल रुकना-----यात्रियों द्वारा भला-बुरा कहना----- ड्रायवर का देखना-----शेखर के कारण यात्रियों की जान बचना---- राष्ट्रपति द्वारा स्वर्ण पदक।

होशियार शेखर

रेल पटरी के पास एक झोंपड़ी में शेखर अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन बरसात की ऋतु में बहुत ज़ोरों की बरसा होने लगी। आँधी और तूफान आने

लगे तब शेखर अपनी झोंपड़ी पर प्लास्टिक ढकने बाहर निकला तभी अचानक उसकी नज़र रेल की पटरी पर पड़ी और उसने देखा की पटरी उखड़ गई है। उसे दूर से आती गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। वह सोचने लगा क्या करे तब अचानक उसे कुछ सुझा और उसने पहनी हुई लाल कमीज को निकाल कर एक डंडी में बाँध दिया और पटरी पर खड़े रहकर हिलाने लगा। ड्राइवर ने लाल झंडा देख गाड़ी रोक दी। यात्रियों को पहले उस पर गुस्सा आया और रेल रोकने के लिए भला-बुरा कहने लगे परंतु जब उन्हें सच का पता चला तब सबने उसकी सूझ-बूझ की तारीफ़ की। शेखर के कारण यात्रियों की जान बचाने के लिए उसे राष्ट्रपति द्वारा स्वर्ण पदक का पुरस्कार दिया गया।

सीखः मुसीबत के समय सूझबूझ से काम करना चाहिए।

वृत्तांत लेखन

दंत (डेंटल) शिविर पर लगभग 70-80 शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए। [वृत्तांत लेखन में स्थान, समय घटना का उल्लेख आवश्यक है।]

दंत (डेंटल) शिविर

20 अगस्त 20xx को गणगौर समाजसेवी संस्था द्वारा नागपुर में दो दिवसीय मुफ्त डेंटल शिविर का आयोजन का आयोजन किया गया। यह दंत शिविर मशहूर दंत चिकित्सक मुदित मेहरोत्रा की निगरानी में संपन्न हुआ। करीब 2000 लोगों ने इस शिविर का लाभ उठाया। दो दिनों में करीब 100 लोगों के दाँतों से संबंधित कई ऑपरेशन भी सफल रहे। इस अवसर पर लोगों को मुफ्त जाँच, सलाह और दाँतों की सुरक्षा से संबंधित 'दंत स्वास्थ्य पुस्तिका' का भी वितरण भी किया गया।

(4) आपको अपना घर किराए पर देना है - विज्ञापन का प्रारूप 50-60 शब्दों में तैयार कीजिए। [5]

क्या आप ढूँढ रहे है किराये का मकान?

आप की तलाश खत्म हुई

पाईए तीन बेडरूम, हॉल, कीचन का बढ़िया मकान किफ़ायती दाम में

किराया : 20,000/-

मकान : दिल्ली स्टेशन के सामने

तो आज ही संपर्क करें - मानव शर्मा दूरभाष 80xx xxxx40

(5) किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में निबंध लिखिए। [7]

समय बड़ा बलवान

समय निरंतर प्रवाहित जलधारा के समान है जो आगे ही बढ़ता है बिना किसी की प्रतीक्षा या विश्राम के। जो व्यक्ति समय के साथ आगे बढ़ सकता है, वही जीवन में सफल होता है। समय, सफलता की कुंजी है।

समय का सदुपयोग ही व्यक्ति को विकास के मार्ग पर अग्रसर करता है। समय के महत्त्व को समझने वाला जीने की कला सीख लेता है। किसी ने समय की तुलना धन से की है। वास्तव में समय, धन से भी कही अधिक मूल्यवान है। धन तो आता-जाता रहता है, किन्तु गया हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण है कि सही समय पर सही निर्णय लेने वाले व्यक्ति ही जीवन में सफल हुए हैं।

कबीर दास जी ने कहा है कि-

काल करै सो आज करए आज करै सो अब।

पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब।।

इसलिए मनुष्य अपने समय का विभाजन इस प्रकार करे ताकि उसके पास अध्ययन, व्यायाम, मनन-चिंतन आदि सभी कार्यों के लिए समय हो। समय विभाजन कर उसका सदुपयोग करना सीख लें तो भविष्य सुविधाजनक और सुखमय हो जाता है।

वृक्ष लगाओ देश बचाओ

भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार पेड़ को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। यह हमारे जीवन का आवश्यक अंग है। वृक्ष के बिना हम भी अधिक समय तक अपने अस्तित्व को जिंदा नहीं रख सकते। वन वातावरण में से कार्बन डाईऑक्साइड को कम करते हैं। वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। बहुमूल्य ऑक्सीजन देते हैं। पेड़ हमें भोजन, घरों के निर्माण और फर्नीचर बनाने के लिए हमें लकड़ी प्रदान करते हैं। वे हमें ईंधन के लिए लकड़ी उपलब्ध कराते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ देते हैं। बढ़ती आबादी, शहरीकरण के कारण हरियाली तेजी से कम हो रही है। जितनी तेज़ी से हम इनकी कटाई कर रहे हैं, उतनी तेज़ी से ही हम अपनी जड़ें भी काट रहे हैं। वृक्षों के कटाव के कारण आज भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। पेड़ों का क्रूर वध हमारे विनाश में सहायक होगा। रेगिस्तान का विस्तार होगा, नदियाँ सूख जाएगी, पानी की कमी होगी, भूमि बंजर हो जाएगी, प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा। हमारा अस्तित्व उन पर निर्भर करता है इसलिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी होगी। पर्यावरण की समस्याओं का एकमात्र समाधान पेड़ों की सुरक्षा है। सरकार ने जनमानस को जागृत करने के लिए 1950 में वन महोत्सव कार्यक्रम आरंभ किया।

पर्यावरण को बचाने के लिए यह हमारे जागने का वक्त है। सिर्फ जागने का ही नहीं, कुछ करने का भी। इसके लिए जरूरी है कि हम पेड़ लगाएँ। विनोबा भावे ने हर व्यक्ति को एक पेड़ लगाना चाहिए यह संदेश दिया है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि वन ही जीवन है, इस वन-जीवन से हम प्यार करें और वृक्षों को लगाकर इसकी रक्षा करे।

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। आज भारत में ऐसे कई व्यक्ति मौजूद हैं जो भ्रष्टाचारी है।

आज हम अपने चारों ओर भ्रष्टाचार के अनेक रुप देख सकते हैं जैसे रिश्वत, काला-बाजारी, जान-बूझकर दाम बढ़ाना, पैसा लेकर काम करना, सस्ता सामान लाकर महँगा बेचना आदि।

भष्ट्राचार ने भयानक रोग की तरह हमारे समाज को खोखला कर दिया है। आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। असमानता, आर्थिक, सामाजिक या सम्मान, पद-प्रतिष्ठा के कारण भी व्यक्ति अपने आपको भ्रष्ट बना लेता है। भारत के अंदर तो भ्रष्टाचार का फैलाव दिन-भर-दिन बढ़ रहा है। भष्ट्राचार को तीन प्रमुख वर्गो में विभक्त कर सकते हैं: राजनीतिक, प्रशासनिक और व्यावहारिक। आज सरकारी व गैरसरकारी विभाग से लेकर शिक्षा के मंदिर माने जाने वाले स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं है। भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है।

भ्रष्टाचार के कारण भारतीय संस्कृति का पतन हो रहा है। भ्रष्टाचार दूर करने के लिए हमें शिक्षण द्वारा व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना होगा। सबके लिए उचित रोज़गार उपलब्ध कराना होगा। समाज में विभिन्न स्तरों पर फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था उपलब्ध करानी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने को इस भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। हमें प्रशासन व शासन की व्यवस्था को पूरी तरह स्वच्छ व पारदर्शी बनाना होगा।